अव्यक्त मुरली 03-06-2018
(रिवाइज 05.12.83) से प्रश्नोत्तर

संगमयुग - बाप बच्चों के मिलन का युग

प्रश्न 1- आज सभी यहां किसलिए पहुँच गये हैं?
उत्तर - मिलन मेला मनाने के लिए

प्रश्न 2 - यह कौन-सा मेला है?
उत्तर - बाप और बच्चों के मधुर मिलन का मेला।

प्रश्न 3 - वियोगी और सहजयोगी में क्या अतंर है?
उत्तर - मिलन मेले के लिए अनेक आत्मायें अनेक प्रकार के प्रयत्न करते हुए भी बेअन्त, असम्भव वा मुश्किल कहते इंतजार में ही रह गये हैं। कब हो जायेगा - इसी उम्मीदों पर चलते चले और अब भी चल रहे हैं। ऐसी भी अन्य आत्मायें हैं जो कब होगा, कब आयेंगे, कब मिलेंगे ऐसे वियोग के गीत गाते रहते हैं। वो सभी हैं कब कहने वाले और आप सब हैं - अभी वाले। वो वियोगी और आप सहज योगी। सेकण्ड में मिलन का अनुभव करने वाले।

प्रश्न 4- अभी भी कोई आपसे पूछे कि बाप से मिलना कब और कितने समय में हो सकता है, तो क्या कहेंगे?
उत्तर - निश्चय और उमंग से यही कहेंगे कि बाप से मिलना बच्चे के लिए कभी मुश्किल हो नहीं सकता। सहज और सदा का मिलना है।

प्रश्न 5- संगमयुग कौन-सा युग है?
उत्तर - संगमयुग है ही बाप बच्चों के मिलन का युग। निरन्तर मिलन में रहते हो ना। है ही मेला।

प्रश्न 6- मेला अर्थात् क्या?
उत्तर - मेला अर्थात मिलाप।

प्रश्न 7- आप बड़े फखुर से क्या कहेंगे?
उत्तर - आप लोग मिलना कहते हो लेकिन हम तो सदा उन्हीं के साथ अर्थात् बाप के साथ खाते-पीते, चलते, खेलते, पलते रहते हैं।

प्रश्न 8- वह क्या पूछते हैं?
उत्तर - परमात्मा बाप से स्नेह कैसे होता है, मन कैसे लगता!

प्रश्न 9- आपके दिल से क्या आवाज निकलता?
उत्तर - कि मन कैसे लगाना तो छोड़ो लेकिन मन ही उनका हो गया। आपका मन है क्या जो मन कैसे लगावें। मन बाप को दे दिया तो किसका हुआ! आपका या बाप का!

प्रश्न 10- जब मन ही बाप का है तो फिर कौन सा प्रश्न नहीं उठ सकता?
उत्तर - मन बाप के साथ लगावें कैसे यह प्रश्न उठ नहीं सकता।

प्रश्न 11- सदा लवलीन रहते हैं तो कौन सा क्वेश्चन नहीं हो सकता?
उत्तर - प्यार कैसे करते यह भी क्वेश्चन नहीं। क्योंकि सदा लवलीन ही रहते हैं। प्यार स्वरूप बन गये हैं।

प्रश्न 12- मास्टर प्यार के सागर बन गये, तो क्या करना नहीं पड़ता?
उत्तर - प्यार का स्वरूप हो गये हैं। तो प्यार करना नहीं पड़ता।

प्रश्न 13- सारा दिन क्या अनुभव करते?
उत्तर - प्यार की लहरें स्वत: ही उछलती हैं ना। जितना-जितना ज्ञान सूर्य की किरणें वा प्रकाश बढ़ता है उतना ही ज्यादा प्यार की लहरें उछलती हैं।

प्रश्न 14- अमृतवेले ज्ञान सूर्य की ज्ञान मुरली क्या काम करती?
उत्तर - खूब लहरें उछलती हैं ना। सब अनुभवी हो ना! कैसे ज्ञान की लहरें, प्रेम की लहरें, सुख की लहरें, शान्ति और शक्ति की लहरें उछलती हैं और उन ही लहरों में समा जाते हो। यही अलौकिक वर्सा प्राप्त कर लिया है ना! यही ब्राह्मण जीवन है।

प्रश्न 15- लहरों में समाते-समाते क्या बन जायेंगे?
उत्तर - सागर समान बन जायेंगे। ऐसा मेला मनाते रहते हो वा अभी मनाने आये हो!

प्रश्न 16- ब्राह्मण जीवन की विशेषता क्या है?
उत्तर - सागर में समाना

प्रश्न 17- कौन-सी विशेषता को ही वर्से की प्राप्ति कहा जाता है?
उत्तर - सागर में समाने की विशेषता को ही वर्से की प्राप्ति कहा जाता है।

प्रश्न 18- सारे विश्व के ब्राह्मण कौन-सी अलौकिक प्राप्ति के अनुभव के चात्रक हैं?
उत्तर - सागर में समाने की प्राप्ति के।

प्रश्न 19- सर्व चात्रक बच्चे किसके सामने हैं?
उत्तर - बापदादा के सामने हैं।

प्रश्न 20- बापदादा के आगे कौन सा हॉल है?
उत्तर - बेहद का हाल है। इस हाल मे भी सभी नहीं आ सकते।

प्रश्न 21- सभी बच्चे क्या लेकर बैठे हैं?
उत्तर - दूरबीन।

प्रश्न 22- साकार में भी कौन-से दृश्य सामने देखने के अनुभव में बापदादा भी बच्चों के सहज श्रेष्ठ सर्व प्राप्ति को देख हर्षित होते हैं।
उत्तर - दूर के, आप सभी भी इतने हर्षित होते हो या कभी हर्षित और कभी माया के आकर्षित और माया के दुविधा में तो नहीं रहते हो!

प्रश्न 23- दुविधा क्या बना देती है?
उत्तर - दलदल।

प्रश्न 24- अभी तो दलदल से निकल क्या हो गये हो?
उत्तर - दिलतख्तनशीन, सोचो कहाँ दलदल और कहाँ दिलतख्त!
क्या पसन्द है? चिल्लाना या तख्त पर चढ़के बैठना। पसन्द तो तख्त है फिर दलदल की ओर क्यों चले जाते हो।

प्रश्न 25- दलदल अपने तरफ कैसे खींच लेती है?
उत्तर - दलदल के समीप जाने से दूर से ही अपने तरफ खींच लेती है।

प्रश्न 26- नयों से बापदादा ने क्या पूछा?
उत्तर - नये क्या समझकर आये हो, कल्प-कल्प के अधिकारी समझ आये हो?

प्रश्न 27- नयों को क्या प्राप्त हो गया है?
उत्तर - पहचान का तीसरा नेत्र प्राप्त हो गया है वा अभी प्राप्त करने आये हो!

प्रश्न 28- सभी आये हुए बच्चों को ब्राह्मण जन्म की बर्थ-डे गिफ्ट बाप द्वारा क्या मिलती है?
उत्तर - तीसरा नेत्र मिलता है। बाप को पहचानने का नेत्र मिलता है।

प्रश्न 29- जन्म लेते, नेत्र मिलते सबके मुख से पहला बोल क्या निकला?
उत्तर - बाबा! पहचाना तब तो बाबा कहा ना!

प्रश्न 30- गिफ्ट को सदा कैसे रखा जाता है?
उत्तर - संभालकर रखा जाता है।

प्रश्न 31- बापदादा को तो सभी बच्चे कैसे हैं?
उत्तर - एक दो से प्यारे हैं।

दादी जी से -
प्रश्न 32- बाप के संग का रंग किसे लगा है?
उत्तर- दादी जी को। समान बाप बन गई!

प्रश्न 33- आप में सदा क्या दिखाई देता है?
उत्तर - बाप दिखाई देता है। तो संग लग गया ना!

प्रश्न 34- कोई भी आपको देखता है तो बाप की याद आती क्यों आती है?
उत्तर - क्योंकि समाये हुए हो।

प्रश्न 35- विशेष स्नेह और सहयोग की छत्रछाया क्यों है?
उत्तर - क्योंकि समाये हुए हो, समान हो गये तो स्पेशल पार्ट है और स्पेशल छत्रछाया खास वतन में बनाई हुई है तब ही सदा हल्की हो। कभी बोझ लगता है? छत्रछाया के अन्दर हो ना। बहुत अच्छा चल रहा है। बापदादा देखदेख हर्षित होते हैं।

प्रश्न 36- विशेष आत्माओं की क्या विशेषता है?
उत्तर - विशेष आत्माएं सेकण्ड भी एक संकल्प, एक बोल भी साधारण नहीं कर सकती।

प्रश्न 37- कौन सी स्मृति सदा समर्थ बनाने वाली है।
उत्तर - सारे विश्व में हम विशेष आत्मायें हैं।
प्रश्न 38- कौन सा नशा और खुशी सदा रहे?
उत्तर - समर्थ आत्मायें हैं, विशेष आत्मायें हैं यह नशा और खुशी सदा रहे।

प्रश्न 39- समर्थ अर्थात् क्या
उत्तर - व्यर्थ को समाप्त करने वाले।

प्रश्न 40- व्यर्थ को समाप्त करने का उदाहरण क्या है?
उत्तर - जैसे सूर्य अन्धकार और गन्दगी को समाप्त कर देता है। ऐसे समर्थ आत्मायें व्यर्थ को समाप्त कर देती हैं।

प्रश्न 41- समर्थ स्मृति रहने से क्या होगा?
उत्तर - व्यर्थ का खाता खत्म, श्रेष्ठ संकल्प, श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ बोल, सम्पर्क और सम्बन्ध का खाता सदा बढ़ता रहेगा।

प्रश्न 42- कौन सी विस्मृति से व्यर्थ शुरु होता है?
उत्तर - कि हम समर्थ आत्मायें हैं यह विस्मृति हुई तो व्यर्थ शुरू हो जायेगा।

प्रश्न 43- स्थिति स्वत: कैसे बनती है?
उत्तर - स्मृति स्थिति को स्वत: बनाती हैं। तो स्मृति स्वरूप हो जाओ।

प्रश्न 44- क्या कभी नहीं भूलता?
उत्तर - स्वरूप कभी भी भूलता नहीं।

प्रश्न 45- कौन सा अभ्यास और लगन ही जीवन है?
उत्तर - स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप। इसी लगन में सदा मग्न - यही जीवन है।

प्रश्न 46- कभी भी किसी परिस्थिति में वायुमण्डल में क्या कम होने वाला नहीं है?
उत्तर -उमंग-उत्साह। सदा आगे बढऩे वाले।

प्रश्न 47- अब नहीं तो कब नहीं - यह किस संदर्भ में बाबा ने कहा और क्यों कहा?
उत्तर - उमंग-उत्साह के संदर्भ में, संगमयुग है ही उमंग-उत्साह प्राप्त कराने वाला। यदि संगम पर उमंग-उत्साह नहीं होता तो सारे कल्प में नहीं हो सकता।

प्रश्न 48- कौन सा जीवन उमंग उत्साह का जीवन है?
उत्तर - ब्राह्मण जीवन ही उमंग-उत्साह की जीवन है।

प्रश्न 49- उमंग क्या रहना चाहिए?
उत्तर - जो मिला है वह सबको बाँटे यह उमंग रहे। और उत्साह सदा खुशी की निशानी है।

प्रश्न 50- उत्साह वाला सदा कैसे रहेगा?
उत्तर - खुश रहेगा। उत्साह रहता - बस, पाना था वो पा लिया।

प्रश्न 51- कौन से नशे और खुशी में रहो?
उत्तर - सदा अचल अडोल स्थिति में रहने वाली अंगद के समान श्रेष्ठ आत्मायें हैं, इसी नशे और खुशी में रहो।

प्रश्न 52- सदा अचल कौन रहते हैं?
उत्तर - सदा एक के रस में रहने वाले, एकरस स्थिति में रहने वाले सदा अचल रहते हैं।

प्रश्न 53- जहाँ एक होगा वहाँ क्या नहीं होगा?
उत्तर - कोई खिटखिट नहीं।

प्रश्न 54- दो होता तो क्या होती?
उत्तर - दो होता तो दुविधा होती।

प्रश्न 55- एक की याद में कैसे रहना है?
उत्तर - एक की याद में सदा न्यारे और प्यारे।

प्रश्न 56- बुद्धि कहां नहीं जानी चाहिए?
उत्तर - एक के बजाए दूसरे कहाँ भी बुद्धि न जाये। जब एक में सब कुछ प्राप्त हो सकता है तो दूसरे तरफ जाएं ही क्यों! कितना सहज मार्ग मिल गया। एक ही ठिकाना, एक से ही सर्व प्राप्ति और चाहिए ही क्या!

प्रश्न 57- कौन सी खुशी में नाचते रहो?
उत्तर - सब मिल गया बस जो चाहना थी, बाप को पाने की वह प्राप्त हो गया तो इसी खुशी में नाचते रहो।

प्रश्न 58- कौन से गीत गाते रहो?
उत्तर - खुशी के गीत गाते रहो।

प्रश्न 59- किसमें कोई प्राप्ति नहीं है?
उत्तर - दुविधा में कोई प्राप्ति नहीं इसलिए एक में ही सारा संसार अनुभव करो।

प्रश्न 60- एक में ही सारा संसार क्यों अनुभव करना है?
उत्तर - क्योंकि दुविधा में कोई प्राप्ति नहीं है।

प्रश्न 61- हर कर्म कैसे करना है?
उत्तर - अपने को सदा हीरो पार्टधारी समझते हुए हर कर्म करना है।

प्रश्न 62- जो हीरो पार्टधारी होते हैं उनको क्या होता है?
उत्तर - बहुत खुशी होती है।

प्रश्न 63- उनका पार्ट कैसा है और आपका कैसा है?
उत्तर - उनका हुआ हद का पार्ट। आप सबका बेहद का पार्ट है।

प्रश्न 64- आप किसके साथ पार्ट बजाने वाले हैं! किसके सहयोगी हैं, किस सेवा के निमित्त हैं, यह स्मृति सदा रहे तो क्या होगा?
उत्तर - सदा हर्षित, सदा सम्पन्न, सदा डबल लाइट रहेंगे। हर कदम में उन्नति होती रहेगी।

प्रश्न 65- कौन सा गीत सदा खूब गाओ और गाना सिखाओ?
उत्तर - वाह मैं और वाह मेरा भाग्य!

प्रश्न 66- 5 हजार वर्ष की लम्बी लकीर खिंच गई तो क्या करना है?
उत्तर - खुशी में नाचो।

प्रश्न 67- सदा एक बाप की याद में रहने वाली कौन-सी आत्मायें हो?
उत्तर - एकरस स्थिति में स्थित रहने वाली श्रेष्ट आत्माएँ हो।

प्रश्न 68- सबने क्या वायदा किया?
उत्तर - यही वायदा किया है ना कि सब कुछ आप ही हो। आप सबको तो है ही एक। एक में सब समाया हुआ है। जब है ही एक, और कोई है नहीं। तो जायेंगे कहाँ। कोई काका, मामा, चाचा तो नहीं है ना।

प्रश्न 69- कुमारियों ने कौन सा वायदा किया है?
उत्तर - पक्का वायदा किया और वरमाला गले में पड़ी। वायदा किया और वर मिला। वर भी मिला और घर भी मिला। तो वर और घर मिल गया।

प्रश्न 70- कुमारियों के लिए मां-बाप को क्या सोचना पड़ता है?
उत्तर - वर और घर अच्छा मिले।

प्रश्न 71- कुमारियों को कैसा वर मिल गया?
उत्तर - ऐसा वर मिला जिसकी महिमा जग करता है।

प्रश्न 72- घर भी कैसा मिला है?
उत्तर - जहाँ अप्राप्त कोई वस्तु नहीं।

प्रश्न 73- पक्की वरमाला पहनने वाली कुमारियों को क्या कहा जाता है?
उत्तर - 'समझदार' 'कुमारियाँ' तो हैं ही समझदार।

प्रश्न 74- बापदादा को कुमारियों को देखकर खुशी क्यों होती है?
उत्तर - क्योंकि बच गयीं। कोई गिरने से बच जाए तो खुशी होगी ना।

प्रश्न 75- मातायें भी क्यों लकी हैं?
उत्तर - क्योंकि फिर भी गऊपाल की गऊएँ हैं।

प्रश्न 76- जो मायाजीत होंगे उनको कौन-सा नशा जरूर होगा।
उत्तर - विश्व-कल्याणकारी का

प्रश्न 77- बेहद की सेवा अर्थात् क्या?
उत्तर - विश्व की सेवा। हम बेहद के मालिक के बालक हैं, यह स्मृति सदा रहे। क्या बन गये, क्या मिल गया यह स्मृति रहती है! बस इसी खुशी में सदा आगे बढ़ते रहो।

प्रश्न 78- सदा कौन सी मस्ती में मस्त रहो।
उत्तर - बाप के याद की।

प्रश्न 79- ईश्वरीय मस्ती क्या बना देती है?
उत्तर - एकदम फर्श से अर्श निवासी।

प्रश्न 80- ऊँचे ते ऊँचे बाप के बच्चे बने तो कहां रहेंगे?
उत्तर - अर्श पर, अर्श है ऊँचा तो नीचे कैसे आयेंगे।

प्रश्न 81- कभी भी बुद्धि रूपी पांव फर्श पर नहीं। ऊपर। इसको कहा क्या जाता है?
उत्तर - ऊँचे ते ऊँचे बाप के ऊँचे बच्चे। यही नशा रहे। सदा अचल अडोल सर्व खजानों से सम्पन्न रहो।

प्रश्न 82- थोड़ा भी माया में डगमग हुए तो क्या अनुभव नहीं होगा?
उत्तर - सर्व खजानों का अनुभव नहीं होगा।

प्रश्न 83- बाप द्वारा मिले खजानों को सदा कायम रखने का साधन क्या है?
उत्तर - सदा अचल अडोल रहो।

प्रश्न 84- सदा ही खुशी की अनुभूति कब होती रहेगी।
उत्तर - सदा अचल रहने से।

प्रश्न 85- विनाशी नेता-पन की कुर्सी मिलती है, नाम-शान मिलता है तो भी क्या होता है?
उत्तर - खुशी होती है।

प्रश्न 86- अविनाशी खुशी किसे रहेगी?
उत्तर - अविनाशी खुशी उसे रहेगी जो अचल अडोल होंगे।

प्रश्न 87- पहले गुलाम थे, गाते थे मैं गुलाम, मैं गुलाम.. अब क्या बन गये?
उत्तर -स्वराज्यधारी, गुलाम से राजा बन गये।

प्रश्न 88- कैसा राज्य सारे कल्प में नहीं प्राप्त हो सकता?
उत्तर - बाप को याद करना और गुलाम से राजा बनना।

प्रश्न 89- विश्व का राज्य कैसे मिलता है?
उत्तर - स्वराज्य से विश्व का राज्य मिलता है।

प्रश्न 90- कर्मेन्द्रियाँ स्वत: ही श्रेष्ठ रास्ते पर कब चलेंगी?
उत्तर - जब इसी नशे में सदा रहेंगे कि हम स्वराज्य अधिकारी हैं।

प्रश्न 91- सदा कौन सी खुशी में रहना है?
उत्तर - सदा इसी खुशी में रहो कि पाना था सो पा लिया.. क्या से क्या बन गये। कहाँ पड़े थे और कहाँ पहुँच गये!

प्रश्न 92 - याद, प्यार और नमस्ते -----
उत्तर - ऐसे सर्व अधिकारी आत्माओं को,
सदा सागर के भिन्न-भिन्न लहरों में लहराने वाले अनुभवी मूर्त बच्चों को,
सदा दिलतख्तनशीन बच्चों को,
सदा मिलन मेला मनाने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को,
साथ-साथ देश वा विदेश के दूरबीन लिए हुए बच्चों को, विश्व के अनजान बच्चों को भी बापदादा याद-प्यार दे रहे हैं। सर्व आत्माओं को यथा स्नेह तथा स्नेह सम्पन्न याद-प्यार और वारिसों को नमस्ते।

ओम शांति